श्री रवि संगम

बिहार के कुछ जलप्रपात एवं प्राकृतिक जलाशय

हमारा बिहार जल के मामले में धनी है। यहाँ अनेक गंगा, कोशी, गण्डक आदि अनेक विशाल नदियाँ बहती हैं। साथ ही, नदियों की धारा में आये परिवर्तनों से प्राकृतिक झील भी काफी संख्या में है, जो न केवल जल भण्डारण की दृष्टि से अपितु पर्यटन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। दक्षिण बिहार में पहाड़ियों से गिरते जलप्रपात भी प्राकृतिक जलस्रोत के रूप में बिहार के लिए वरदान है। धार्मिक आस्था से जुड़े हुए इन प्राकृतिक जल-स्रोतों के स्थल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया गया है। यहाँ पर ऐसे ही कुछ प्राकृतिक जल-स्रोतों का उल्लेख किया जा रहा है।

बिहार की अकूत जल संपदा अभूतपूर्व है। इनके विकास व दोहन के लिए सबसे पहले इसे इंफार्मेशन टेक्नालाजी से जोड़ना होगा। इसका बृहत् डाटाबेस तैयार करना होगा। क्योंकि इनमें से कुछ ही विकसित हैं व ज्ञात हैं। बाकि सभी या तो उपेक्षित हैं, जिनका विकास नहीं हुआ है या अज्ञात हैं जिन्हे इंफार्मेशन टेक्नलाजी से अब तक नहीं जोडा गया है– जिनमें सभी जलप्रपात, झील, वेटलैंड, चौर, सरोवर, तालाब, कुण्ड, नदियों को जोड़ना होगा।

इनमें कुछ स्थलों के डाटा कलेक्शन व शूटिंग के लिए 40-70 कि.मी. चलना पड़ा, क्योंकि नक्सल इलाके में सड़क मार्ग से यह सम्भव नहीं था . इसमें प्रत्येक स्थलों का दुर्लभ फोटोग्राफ भी दिया गया है। जल, जीवन व हरियाली के संक्षिप्त डाटा– बेस बनाने का सम्भवतः यह प्रथम प्रयास है जिसे धर्मायण ई-पत्रिका के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। इस दिशा में यह एक सार्थक व अपूर्ण प्रयास है।

ककोलत जलप्रपात, नवादा

लोकेशन : पटना से 140 कि.मी. दूर, पटना-रांची मुख्य सड़क मार्ग से 14 कि.मी. पर, नवादा-गोविंदपुर मार्ग में थाली से 3 कि.मी. दक्षिण, गोविंदपुर प्रखंड के एकतारा जंगल व मनोरम पहाड़ियों के बीच स्थित है। यह गया व बिहारशरीफ के निकट, नवादा जिला मुख्यालय से 33 कि.मी. दक्षिण-पूरब में स्थित है.

महत्व : यह प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। ककोलत जलप्रपात हजारीबाग की पर्वत श्रेणी से बहती हुई लोहबर पहाड़ी नदी लोहदंड पहाड़ी से 80 फीट की ऊँचाई से गिरकर गहरे जलाशय व धारा का रूप लेती है। यह 160 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस जलप्रपात का प्रथम दर्शन फ्रांसिस बुकानन ने वर्ष 1811 में किया था। इनकी पुस्तक के अनुसार, जलप्रपात के निकट काफी गहरी खाई थी, जिसके कारण एक अंग्रेज अधिकारी के आदेश पर स्नान के पूर्व एक पत्थर डालने का नियम बनाया गया था। ताकि किसी दुर्घटना से बचाव के लिए खाई को भरा जा सके। बाद में वर्ष 1994-95 में जिला प्रशासन द्वारा इस खाई को भरकर एक आकर्षक तालाब का रूप दिया गया। जलप्रपात के निकट पहुँचने के लिए सीढ़ियों का निर्माण भी किया गया है। बिहार के सभी जलप्रपातों में इनकी विशेषता है कि इसे (कृत्रिम रूप से घेरकर) पर्यटकों के सुरक्षित स्नान को ध्यान में रखकर

*बिहार पर्यटन-सूचना सामग्रियों के लेखक, भूतपूर्व पत्रकार, पटना

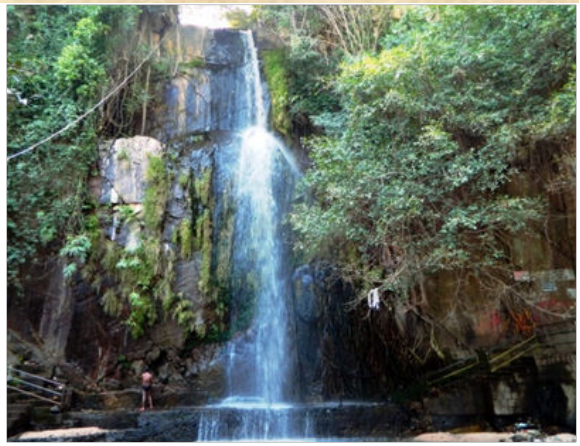

इसका विकास किया गया है। यहाँ गर्मी के दिनों में पहाड़ के भीतर से निकलने वाली जलधारा इतनी ठंढ़ी रहती है कि वहाँ भीषण गर्मी का बिल्कुल एहसास नहीं होता। इस पानी में बना खाना इतना स्वादिष्ट होता है कि पर्यटक इसे वर्षो याद रखते हैं। ककोलत के बारे में मान्यता है कि अपने वनवास के क्रम में महाभारत काल में पांडवों ने यहाँ एक ऋषि के श्राप से त्रेतायुग से सांप बने राजा निगास को मुक्ति दी थी। माना जाता है कि यहाँ जो भी नहाता है, उसे सर्पयोनि से मुक्ति मिल जाती है.

पटना-रांची सड़क मार्ग पर फतेहपुर मोड़ पर 'ककोलत द्वार' बनाया गया है, जिसपर इसका इतिहास अंकित हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के अलावा ककोलत का पुरातात्विक महत्व भी है। ककोलत की पहाड़ियों में पाषाणकालीन उपकरण मिले हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि कभी यहाँ कोल जाति का निवास था। इसी कारण इसका नाम ककोलत पड़ा। ककोलत के निकट वन विभाग का रेस्ट हाउस व एकतारा में जिला परिषद् का डाकबंगला है।

अम्बाकोलवा जलप्रपात, नवादा

लोकेशन : जिले के कौआकोल प्रखंड से 2 कि-मी- की दूरी पर उत्तर में स्थित है।

महत्व : अम्बाकोलवा - प्रसिद्ध पिकनिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। दो पहाड़ों के बीच से बहता जलप्रपात (झरना) - दूर-दूर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस पर्वतमाला पर वन्य जीव भी देखे जा सकते हैं। जलप्रपात के निकट एक जगह नीली मिट्टी मिलती है जो साबुन का झाग पैदा करती है।

मछंदरा जलप्रपात, नवादा

लोकेशन : नवादा जिला के कौआकोल प्रखंड मुख्यालय से 6 कि-मी- उत्तर-पूरब में, पहाड़ियों के मध्य मछंदरा जलप्रपात स्थित है।

महत्व : यहाँ पर्वत के ऊंचे शिखर से जलधारा नीचे कुण्ड में गिरती है। ककोलत के तरह यहाँ भी 14 अप्रैल को मेला लगता है, जिसे 'हदहदवा' के नाम से जाना जाता है. मछंदरा जलप्रपात के निकट एक खंडहर का अवशेष है, जहाँ से प्राचीन ईंटे मिली हैं।

छपराकोल जलप्रपात, नवादा

लोकेशन : नवादा जिला मुख्यालय से 55 कि.मी. व गोविंदपुर प्रखंड मुख्यालय से 6 कि.मी. की दूरी पर पहाड़ की तलहटी में स्थित।

महत्व : छपराकोल गांव है- जहाँ एक मनोरम जलप्रपात है, जो दूर-दूर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। जलप्रपात (झरना) के निकट ही एक चट्टान पर लालरंग की चित्रकारी-ज्यामितिक आकार की आकृति हैं। पहाड़ी के उपर भी प्राचीन अभिलेख उत्कीर्ण है।

सीताकुण्ड, रोहतास (सासाराम)

लोकेशन : कैमूर पहाड़ी की घाटियों में, जिला मुख्यालय रोहतास से 70 कि. मी. दूर, जिले के दक्षिणी कोने में चेनारी प्रखंड के अन्तम छोर पर, उगहनि पञ्चयत के गीता आश्रम से 30 कि. मी. सड़क मार्ग या 12 कि. मी. चढ़ाई (दो पर्वत शिखर के बाद) गुप्ताधाम स्थित है। सीताकुण्ड गुप्ताधाम से 1 कि. मी. दक्षिण में स्थित है।

महत्त्व : यह स्थल 'शीतलकुण्ड' के नाम से भी जाना जाता है. इस कुण्ड का आकार 5000 वर्गफीट के लगभग है। कुण्ड के बगल में 3000 फीट ऊंचे कैमूर पर्वत (कैमूर पर्वत शृंखला में से एक) से एक प्राकृतिक झरना गिरता है। यहाँ का दृश्य अलौकिक है। यह स्थान माता अंजनी का निवास स्थान व हनुमान के जन्मस्थान के रूप में भी जाना जाता है। मेला के अवसर पर बड़ी संख्या में महिलाएँ यहाँ स्नान कर गुफा मन्दिर में शिवलिंग की आराधना करती हैं. गुप्ताधाम मन्दिर परिसर 12.5 कट्ठा क्षेत्र में विस्तृत है. जिसमें गुफा मन्दिर के अलावा हनुमान मन्दिर, श्री शिवानंदजी महाराज का समाधिस्थल, शिवानंद आश्रम आदि प्रमुख है।

मंझर जलप्रपात, रोहतास (सासाराम)

लोकेशन : जिला मुख्यालय सासाराम से 10 कि. मी. पर, डेयरी आन सोल व सासाराम के बीच, कैमूर की पहाड़ियों में स्थित।

महत्त्व : बिहार के खूबसूरत जलप्रपातों में यह जलप्रपात शामिल है, जो दूर-दूर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। सिख धर्मावलंबियों का यह प्रिय स्थल है। सिख आस्था के अनुसार श्रद्धालू अपने साथ पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब लाकर यहाँ तीन दिन प्रवास करते हैं। हरेक वर्ष रक्षाबंधन के बाद, प्रथम रविवार को यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग आते हैं।

देवकुण्ड, औरंगाबाद

लोकेशन : औरंगाबाद व अरवल के सीमा पर स्थित, देव मन्दिर से 45 कि.मी. उत्तर, औरंगाबाद जिला मुख्यालय से राष्ट्रीय उच्च पथ 98 होते हुए दाउदनगर से हंसपुरा होती हुई, रायपुर बंधवा तक पक्की सड़क से थोड़ी दूर पर स्थित।

महत्त्व : यहाँ स्थित देवकुण्ड प्राचीन धार्मिक महत्त्व का स्थल है। आस्था है कि पौराणिक काल में यहाँ 'च्यवन ऋषि का आश्रम' था। इस स्थल पर भगवान् राम ने तीर्थयात्रा भ्रमण के क्रम में, पितरों को पिण्डदान करने के पूर्व, च्यवनाश्रम आकर, शिवलिंग की स्थापना की थी, जो कालांतर में 'दुग्धेश्वरनाथ महादेव' के नाम से जाना गया। वर्तमान में यहाँ 'दुग्धेश्वरनाथ महादेव मन्दिर' स्थापित है। यह देवकुण्ड से थोड़ी दूरी पर स्थित है। आस्था है कि इस स्थल से भीतर ही भीतर

राजगीर, बराबर, गुप्तेश्वर धाम व रोहतास किला तक पहुंचने के लिए सुरंगे थी। मठ में वर्तमान त्रिकोण हवनकुण्ड (तुलसी वेदिका) को सुरंग से संबद्ध माना जाता है। आश्विन व चैत्र नवरात्रें में यहाँ विशेष रूप से शक्ति की आराधना का महत्त्व है। फाल्गून व वैशाख की शिवरात्रि को लगनेवाले मेला में बड़ी संख्या में धर्मावलंबी आते हैं।

करकटगढ जलप्रपात, कैमूर

लोकेशन : कैमूर जिला मुख्यालय से उत्तर – पश्चिम, एन। एच। 2 के निकट, कर्मनाशा नदी के उपरी हिस्से में स्थित।

महत्व : 300 फुट चौडा और 100 फीट ऊंचा करकटगढ़ जलप्रपात का पौराणिक महत्व है। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में मौजूद यह जलप्रपात सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। अलग–अलग मौसम में इसकी छटा अलग–अलग मनमोहक रूप में दिखाई पड़ती है। गर्मी के दिनों में इस जलप्रपात का विहंगम दृश्य नीचे कुण्ड में दिखता है।

करकटगढ़ जलप्रपात से अघौरा तक कर्मनाशा नदी लगभग 25 कि. मी. पहाडी क्षेत्र में फैली है। वर्ष 1979 में इस क्षेत्र को वन आश्रयणी के रूप में घोषित करते हुए कर्मनाशा नदी में बड़ी संख्या में मगरमच्छों के मिलने के कारण, उनको मारने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसके पूर्व वर्ष 1916 में यह स्थान तब चर्चा में आया, जब 75 मगरमच्छ कर्मनाशा नदी में दिखाई दिये थे। इस स्थान पर दो तालाब हैं। एक तालाब मगरमच्छों के रहने के लिए तथा दूसरा तालाब गर्भवती मादा मगरमच्छों के रहने के लिए सरकारी निर्णय विचाराधीन है। इस स्थल को मगरमच्छ संरक्षण शरणस्थली के रूप में विकसित करने की योजना है। मगरमच्छों के लिए दिसंबर माह प्रजनन के लिए होता है। ब्रिटिश काल में बिहार व उड़िसा प्रांत के शाहाबाद के गजेटियर एल.एस.एस. ओमैली ने भी इसे इस क्षेत्र में प्रकृति का सबसे खूबसूरत जलप्रपात बताया था।

बडकाटाली जलप्रपात, लखीसराय

लोकेशन : जिला के पीरी बाजार थाना क्षेत्र के बरियारपुर पञ्चयत में स्थित।

महत्त्व : टीला झरना के नाम से जाना जाने वाला यहाँ भूगर्भीय जल स्त्रोत है, जहाँ अनवरत रूप से औषधीय गुणों से लबरेज गुनगुना जल निकलता रहता है। चारो ओर पहाड़ों से घिरे इस झरना में पर्वत की दरारों एवं छिद्रों से जल रिसकर निकलता रहता है।

प्रकृति के इस अनुपम उपहार व नयनभिराम दृश्य को देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ आते हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से भी यह अत्यन्त रमणीक स्थान है। आस्था है कि टाली झरना का जल मिनरल वाटर से कम नहीं है। इस जल का प्रयोग पेट सम्बन्ध बिमारियों के लिए विक्रय भी होता है।

वाल्मीकिनगर झील, पश्चिमी चंपारण

लोकेशन : जिला मुख्यालय बेतिया से 100 कि. मी. दूर उत्तर में, नेपाल सीमा के पास स्थित। बेतिया से बगहा तक रेलमार्ग से व वाल्मीकिनगर सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है।

महत्त्व : भारतीय ऐतिहासिक परम्परा के प्रतीक महर्षि वाल्मीकि की कर्म व तपस्थली 'वाल्मीकिनगर' का पूरा भूभाग- चारो ओर से नदी, झील, झरनों एवं वन से भरा पूरा है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह क्षेत्र कभी पर्यटकों का प्रिय स्थान है। 1960-70 के दशक में वाल्मीकिनगर-बराज बनने, नेपाल नरेश द्वारा वहाँ बिखरी मूर्तियों को संग्रहित करने और हाल के वर्षों में यहाँ बिहार के एकमात्र बाघ परियोजना 'प्रोजेक्ट टाइगर' लागू होने के बावजूद बौद्धकालीन महत्व के इस संपूर्ण क्षेत्र में बिखरे पुरावशेषों, मूर्तियों व भवन स्थापत्य की महत्ता और ऐतिहासिकता को देखते हुए भी इस क्षेत्र का 'अति प्रमुख पर्यटन स्थल' के रूप में विकास नहीं हो पाया है। यह स्थान कभी अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का स्थल रहा होगा। इस स्थल की तीन दिशाओं उत्तर, पूरब व पश्चिम में नदी के विस्तार और पश्चिम में नदी पार– हिमालय व नेपाल का तराई भाग शुरू होता है। प. चंपारण के रामपूरवा से 8 कि. मी. उत्तर, नेपाल का ठोरी से तिब्बत तक पहुंचने का मार्ग है। यह स्थान आज भी सामरिक व किलेबन्द की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सरैया झील, पश्चिमी चंपारण

लोकेशन : पश्चिम चंपारण के जिला मुख्यालय बेतिया से 7 कि. मी. दक्षिण-पश्चिम में बैरिया प्रखंड के निकट, उदयपुर वन्य अभयारण्य के बीच स्थित।

महत्त्व : 18 सौ एकड़ क्षेत्र में, घोड़े के नाल के आकार का विस्तृत विशाल जंगल- जिसे 'सरैया वन' के नाम से जाना जाता है। वाल्मीकि नेशनल पार्क स्थित उदयपुर वन के बीच में एक विशाल खूबसूरत झील है - जो प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट रहा है।

कभी इस झील की खासियत यह थी कि इसके चारो ओर सघन 'जामुन के पेड़ लगे हुए थे - जो चू-चू कर झील में गिरते थे- स्वास्थ्य लाभ के लिये लोग खरीदकर इसके जल का सेवन करते थे।

वाल्मीकि नेशनल पार्क व उदयपुर अभयारण्य, पश्चिमी चंपारण

नेपाल से सटे प. चंपारण स्थित वाल्मिकि नेशनल पार्क लगभग 900 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला मनोरम दर्शनीय स्थल

है। पटना से 300 कि.मी. दूर यह नेशनल पार्क सवाना भूमि व दलदल का क्षेत्र है, जहाँ गैंडे, बाघो के अलावा चीतल, सांभर, तेंदुआ, नीलगाय बहुतायत में पाये जाते हैं- प्राकृतिक सौंदर्य के बीच यहाँ वन्यजीवों को देखने का अपना ही आनंद है। वर्ष 1978 में स्थापित वाल्मीकि वन्यजीव अभयारण्य के 464-60 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में वर्ष 1990 में 419-18 वर्ग कि. मी. क्षेत्र और जोड़ा गया है। राज्य का यह सबसे आकर्षक व बड़ा वन्यजीव अभयारण्य है। इसे सन् 1989 में 'वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान' घोषित किया गया- राज्य का यह पहला अभयारण्य है - जहाँ बाघो के संरक्षण हेतु 'बाघ परियोजना चलाई जा रही है। इसके अलावा यहाँ उदयपुर अभयारण्य भी है, जो अपेक्षाकृत छोटा अभयारण्य है जो 8-74 वर्ग कि-मी- क्षेत्र में फैला हुआ है।

काबर झील, बेगूसराय

लोकेशन : जिला मुख्यालय से 22 कि.मी. दूर, चेरिया बरियारपुर विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत, भवानीपुर – बखरी के बीच मझौल स्थित। यह स्थान राजधानी पटना से 100 कि. मी. पूरब में स्थित है।

महत्व : काबर झील मीठे पानी का एक उथली झील है। 63.11 वर्ग कि. मी. (6311.2 हेक्टेयर) में फैले इस झील क्षेत्र को पक्षी विहार बनाने की धोषणा वर्ष 1989 में किया गया था। इस झील में कई चौरों के साथ बसाही व एकबा चौर शामिल हैं। शरद ऋतु में मध्य एशियाई देशों साइबेरिया, रूस, लद्दाख से हजारों कि. मी.की यात्रा कर, प्रति वर्ष ठंढ से बचने के लिए बड़ी संख्या में लंबे समय से प्रवासी पक्षियों का एक प्रमुख पसंदीदा स्थल रहा है।

इसे विश्व के महत्वपूर्ण वेटलैंड (पक्षी विहार) की श्रेणी में रखा गया है। 13 नवबंर 2020 में बिहार में पहली बार **रामसर साइट** का दर्जा दिया गया है। इसके साथ ही देश में रामसर का दर्जा पाने वाले पक्षी विहारों की संख्या – काबर झील को मिलाकर 39 हो गयी है। रामसर साइट में शामिल होने के कारण अब काबर झील को अन्तर्राष्टीय स्तर का दर्जा प्राप्त हो गया है। रामसर साइट का दर्जा मिलने से केन्द्र सरकार भी उसके रखरखाव का जिम्मा उठाती है। इसके अलावा अन्तर्राष्टीय संगठनों से भी मदद मिल सकती है। वर्ष 1971 में ईरान के रामसर शहर में पक्षी विहारों के संरक्षण को लेकर संधि हुई थी और इनके लिए मानक तय हुए थे। जिसमें खरा उतरने पर किसी पक्षी विहार को रामसर साइट का दर्जा दिया जाता है। रामसर साइट का दर्जा हासिल करने करने के लिए किसी पक्षी विहार को 9 मानको को पूरा करना होता है। इनमें साल में कम से कम 20 हजार पक्षियों का आगमन, प्रवासी पक्षियों का आना, संकटापन्न पक्षियों की मौजूदगी, मछली प्रजाति के जलचरों की उपस्थिति, जैव विविधता बनाये रखने वाले पक्षियों की मौजूदगी शामिल है। प्राकृतिक सौंदर्य के अलावा काबर झील का धार्मिक महत्व भी है। झील के मध्य बने एक विस्तृत टीले पर सिद्धपीठ माँ जयमंगला का मन्दिर स्थापित है।

खड़गपुर झील, मुंगेर

लोकेशन : जिला मुख्यालय मुंगेर से दक्षिण 58 कि. मी. दूर, मुख्य सड़क मार्ग पर खड़गपुर के विंध्य पर्वत शृंखला की गोद में स्थित।

महत्व : प्रसिद्ध भीमबाँध जलप्रपात के निकट स्थित खड़गपुर झील तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा खूबसूरत हरी-भरी

घाटी है, जहाँ दो जलधाराएँ – उष्ण व शीतल जलप्रपात से आकर मिलती हैं और घने जंगल में जलकुंए का निर्माण करती हैं। खड़गपुर झील की जलधारा बडी संख्या में प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करते हैं। इस हरा पहाड़ी क्षेत्र को वर्ष 1976 में वन्य प्राणी आश्रयणी घोषित किया गया था। इस क्षेत्र के महत्त्व को देखते हुए वर्ष 2019-20 में खड़गपुर झील का आधुनिकीकरण व सौंदर्यीकरण का कार्य शुरू किया गया था।

खड़गपुर एक छोटा नगर है, यहाँ स्थित दरभंगा महाराज द्वारा निर्मित झील, कई झरने व हरियाली देखने को मिलते हैं- 1. खड़गपुर झील से 2 कि। मी। पर पञ्चकुमारी पर्वत के निकट, एक खूबसुरत झरना है। 2. इस झरने से 5.5 कि. मी. दक्षिण-पश्चिम में करमंतरी गांव के निकट लक्ष्मीकुण्ड (गर्म कुण्ड) स्थित है। 3. खड़गपुर से पश्चिम रामेश्वर कुण्ड स्थित है।

सीतातीर्थ – माना जाता है कि माता सीता यहीं धरती में समायी थी। आनंद रामायण के अनुसार, राज्याभिषेक के बाद श्रीराम अपने तीर्थयात्रा के क्रम में गया के विष्णुपद आदि विभिन्न स्थानों पर पिंडदान करते हुए वहाँ से चलकर मुद्गल ऋषि के नवीन आश्रम पहुंचे, जहाँ गंगा उत्तरवाहिनी है। यह स्थान वर्तमान में मुंगेर में है, जो मुद्गल शब्द का अपभ्रंश है। यहाँ से आगे चलकर श्रीराम ने जान लिया कि इसी स्थल पर सीता भूमि में प्रवेश कर दिव्य रूप धारण करेंगी, माता सीता ने भी इसे जानकर अपने नाम से यहाँ सीतातीर्थ की स्थापना की। यह स्थान खडगपुर पहाड़ियों में है।

ऋषिकुण्ड, मुंगेर

लोकेशन : जिला मुख्यालय मुंगेर से दक्षिण-पूर्व में धरहरा से पूरब, इटवा व मिर्जाचक के मध्य में स्थित।

महत्व : इस स्थल की शृंगी ऋषि के तपस्थल के रूप में पहचान है। पर्वतों से घिरे, हरियाली के बीच स्थित इस खूबसुरत जलकुण्ड का नैसर्गिक सौंदर्य अनुपम है।

घोड़ाकटोरा ताल, नालन्दा

लोकेशन : घोडाकटोरा राजगीर से 3 कि.मी. दूर नालन्दा विश्वविद्यालय से उत्तर गिरियक नदी के तट पर स्थित। जिला मुख्यालय बिहारशरीफ से दक्षिण राष्ट्रीय उच्चमार्ग 31 पर है।

महत्त्व : घोडाकटोरा का विशेष महत्त्व प्राकृतिक सौंदर्य के स्थलों के रूप में भी है। राजगीर रोपवे से 6।5 कि।मी। दूर स्थित घोड़ाकटोरा तीन ओर से वादियों से घिरा, चारो ओर हरियाली ओर बीच में 1 कि।मी। में फैला खूबसूरत डैम, यह बिहार का पहला और एकलौता ईकोटूरिस्ट प्लेस है। यहाँ ठहरने की भी व्यवस्था है। डैम में सैर के लिए पैंडल बोट की व्यवस्था है। रोपवे के पास बने प्रवेश द्वार पर दिन में 8 बजे - 3 बजे तक इंट्री दी जाती है।

फुलवरिया झील, नवादा

लोकेशन : जिला मुख्यालय नवादा से 30 कि.मी. दक्षिण में रजौली अनुमंडल स्थित।

महत्त्व : वर्तमान में इस समय यह स्थल **फुलवरिया डैम** के रूप में विकसित है, जो 'पिकनिक स्थल' के रूप में जाना

जाता है। फुलवरिया डैम कई छोटे-छोटे पर्वतों से घिरा है। डैम स्थित झील में कई छोटे टापू हैं। यहाँ नौका-विहार की सुविधा भी उपलब्ध है। वर्ष 1979 में डैम का निमार्ण शुरू हुआ था, जो 30 जून 1985 को पूरा हुआ। झील का जलस्तर 561 फीट न्यूनतम मानक आंकलन है। रजौली अनुमंडल स्थित 'शृंगी ऋषि का पहाड़' पौराणिक महत्व का स्थल है। दो भागों में विभक्त इस पर्वत के बारे में आस्था है कि एक पर्वत पर शृंगी ऋषि रहा करते थे और दूसरे पर्वत पर अन्य ऋषि रहते थे।

गोगाबिल झील (पक्षी अभयारण्य), कटिहार

लोकेशन : जिला मुख्यालय कटिहार से दक्षिण, 20 कि. मी. की दूरी पर मनिहारी ब्लाक स्थित।

महत्व : करीब 217 एकड़ में फैली यह झील एक ओर गंगा नदी तो दूसरी ओर महानन्दा से घिरी है। यहाँ कई प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों का आगमन प्रति वर्ष होता है। बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी यहाँ समुद्र की लंबी यात्रा करके पहुंचते हैं। यहाँ गोगा पक्षी अभयारण्य विकसित करने के तहत करीब 73।78 एकड़ सरकारी जमीन पर कंजर्वेशन रिजर्व बनाया गया है। जबकि जंगला टाल इंग्लिश के ग्रामीनों की 143 एकड़ भूमि पर गोगाबिल सामुदायिक पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया है। साल में 4-6 माह तक यहाँ खेतों में पानी भरा रहने के कारण ग्रामिण एक ही फसल ले पाते हैं। इसके कारण वर्ष 2019 में 250 से अधिक ग्रामीणों ने अपनी जमीन गोगाबिल पक्षी अभयारण्य विकसित करने के लिए दी है। यह प्राचीन झील देशी ही नहीं विदेशी पक्षियों का आरामगाह बन चुका है। करीब 300 प्रजातियों के प्रवासी पक्षी हर साल यहाँ आते हैं। यह क्षेत्र 21 मार्च 1990 से 2000 तक निषिद्ध क्षेत्र रहा है।

बरैला झील, वैशाली

लोकेशन : जिला मुख्यालय वैशाली के पूर्व 60 कि। मी। दूर, महुआ अनुमंडल मुख्यालय से 20 कि. मी.दूर जंदाहा व पातेपुर प्रखंड तक स्थित।

महत्व : 36 वर्ग कि. मी. के क्षेत्र में विस्तृत बरैला झील – डॉ.सलीम अली जुब्बा सहनी पक्षी आश्रयणी के रूप में भी प्रसिद्ध है। जिला के जंदाहा प्रखंड के लोमा बिजरौली से शुरू होने वाला यह विशाल झील क्षेत्र पातेपुर प्रखंड के साथ साथ निकटवर्ती जिला समस्तीपुर जिले के ताजपुर, सरायगंज, पटोरी आदि कई प्रखंडो तक फैला है।

चमगादड के आकार का बरैला झील का वर्ष 1989 के आंकडों के अनुसार, झील

का सतही जल का विस्तार 8.3 वर्ग कि.मी. दलदली भूमि 3.23 वर्ग कि.मी. में तथा जलीय वनस्पति का विस्तार 3.6 वर्ग कि. मी. था। वर्ष 2005 में सतही जल का विस्तार घटकर 4.98 वर्ग कि. मी., दलदली भूमि 3.87 वर्ग कि.मी. एवं जलीय वनस्पति का विस्तार बढ़कर 6.26 वर्ग कि.मी. हो गया था। वर्ष 2014 में सतही जल मात्र 3.7 वर्ग कि.मी. तक रह गया था– जो बताता है कि गत 25 वर्षों में जलमग्न झील के क्षेत्र में 55 प्रतिशत कमी आयी है। यह आकंड़े वर्ष 1989-2014 के बीच उपग्रह द्वारा लिये गये गणना पर आधारित है– जो हाल हाल में सांइटिफिक रिसर्च पब्लिशिंग डेलावेयर (अमेरिका) एवं वुहान (चीन) के जर्नल आफ जियोग्राफिक इंफार्मेशन सिस्टम में प्रकाशित हुआ है। इसके तहत बरैला झील का भौगोलिक अध्ययन सर्वाधिक प्रमाणिक सिद्ध हुआ है, (सैटेलाइट के आंकड़ों के प्रोसेसिंग में आर्क जी।आई।एस। व गूगल अर्थ सहित कई साफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है)। बरैला झील कई बड़े चौरों महामदपुर, मिसरौलिया, अफजलपुर, सालाह, घघरौला, पटकोला, सतकौला, उफरौला, चमरा, झरबेसरा, पड़ोहा आदि को मिलाकर बनी है। यह झील क्षेत्र औषधियों जलीय पौधों से भी परिपूर्ण है। इस झील में साइबेरिया, चीन, स्पेन, जापान, आस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों से नवंबर-दिसंबर माह में 40 प्रजातियों के विदेशी पक्षी आते हैं, जबकि 100 से अधिक प्रजातियों के स्थानिय पक्षी भी यहाँ बड़ी संख्या में आते हैं। आस्था है कि भगवान् श्रीराम अयोध्या से जनकपुर जाने के दौरान इस स्थल पर आये थे। वे जब जनकपुर पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने एक दूसरे को दिखाते हुए कहा था कि **'वन अएला'** बाद में यह नाम धीरे-धीरे बरैला के रूप में चर्चित हो गया।

कुशेश्वरस्थान (पक्षी अभयारण्य), दरभंगा

लोकेशन : जिला मुख्यालय दरभंगा से 56 कि. मी. दूर, सिंघिया से 16 कि.मी. पूरब, समस्तीपुर – खगड़िया रेलखंड स्थित हसनपुर रोड स्टेशन से 22 कि. मी. उत्तर-पूर्व में, जिला के दक्षिण-पूर्व सीमा पर स्थित।

महत्व : बिहार का प्रमुख धार्मिक स्थल व शिवनगरी कहे जाने वाले कुशेश्वरस्थान का धार्मिक महत्त्व के अलावा प्राकृतिक सौंदर्य के मामले में भी विशेष स्थान है। 14000 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले डेढ़ दर्जन से अधिक चौर (कंसार चौर, माहपरा चौर आदि) मिलकर एक मनोहारी झील का निर्माण करते हैं। यह क्षेत्र एक विकसित पक्षी अभयारण्य के रूप में प्रसिद्ध है। सालों भर यहाँ जल रहता है। पक्षियों का नजारा देखने के लिए युनेस्को क्लब की ओर से एक वाच टावर का निर्माण किया गया है। वर्ष 1994 में इस स्थल को पक्षी आश्रयणी बनाने की घोषणा की गयी थी। यहाँ कंसार, माहपरा, चातर, महरी, लरेला, महरैला, नदियामी, महिसौत, दिनमो, मधुवन, असमा सकीरना, बड़गांव, सुघराईन, तिलकेश्वर, उजुआ, गोलमा सहित कई छोटे-बडे चौर – पक्षी अभयारण्य का अनूठा स्थल है।

शरद ऋतु के आगमन के साथ ही उत्तरी गोलार्ध के रूस, जापान, मलेशिया, भूटान, बांगलादेश, चीन, इंडोनेशिया, मारिशस, नेपाल, बर्मा आदि देशों से 4 दर्जन से अधिक प्रजाति के दुर्लभ प्रवासी पक्षियों का आगमन पिछले 70 वर्षों से होता रहा है। इसी कारण से कुशेश्वरस्थान का पक्षी अभयारण्य के रूप में विश्व के मानचित्र पर है।

इनके अतिरिक्त बिहार के प्राकृतिक जलाशयों में मनिहारी घाट के समीप स्थित बांगा झील, पूर्णिया, संजय गांधी जैविक उद्यान झील, पटना, दुर्गावती डैम, रोहतास (सासाराम), भीमबांध डैम, मुंगेर आदि प्रमुख हैं।

**